।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

– आर्यसमाज का चौथा नियम

वर्ष ३१, अंक २० एक प्रति : २ रुपये

सोमवार १२ मई, २००८ से १८ मई, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६५ दयानन्दाब्द : १८५

सष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

रामसेतु विवाद : कारण व निवारण

कुछ वर्षों पूर्व एक प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्रिका (सरिता) में धारावाहिक लेख माला प्रकाशित हुई थी, जिसका शीर्षक था ''हिन्दू समाज के पथ भ्रष्टक तुलसीदास''। यह शीर्षक मुझे अब तक स्मरण है और यह भी कि इसके विरुद्ध अदालत में मुदकमा ठोका गया था, जिसमें पत्रिका का पक्ष जीत गया था और वादी पक्ष को पराजय का मुंह देखना पड़ा था।

उक्त प्रकरण से मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि संत तुलसीदास ने रामचरित मानस में ''स्वान्त सुखाय'' ऐसा बहुत कुछ लिख दिया जिससे मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम की श्रेष्ठ छवि पर कुछ धुंधलापन आया। ऐसा अनेकानेक धार्मिक कही जाने वाली पुस्तकों में हमारे धर्म, संस्कति व

हिन्दू समाज जिस विजया दशमी पर्व को राम द्वारा रावण के वध के रूप में मना रहा है और दीपावली पर्व को लंका विजय के उपरान्त अयोध्या लौटने के रूप में वर्षों से मना रहा है। इनकी सत्यता जांचने की भी कभी हमने कोशिश नहीं की। वाल्मीकि के रामायण को तो छोड़िये, कितनों ने देखी–पढ़ी होगी किन्तु रामचरित मानस का घर–घर अखण्ड पाठ करने वालों को भी कभी सुध नहीं आती कि राम द्वारा रावण वध की व अयोध्या लौटने की वास्तविक तिथि जांच ली जावें। वस्तुतः इन दोनों पर्वो की तिथि, ऋतुओं का दोनों ही पुस्तकों में सुन्दर वर्णन किया गया है और स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि इस समय श्री राम किष्किधा नगरी के बारह ''प्रर्वषण पर्वत ' पर ही

स्वर्ण मण के प्रकरण में भी वाल्मिकी कत रामायण व तुलसी कत राम–चरित मानस में भारी सिद्धान्त भेद हैं। जहां रामायण में सीता, राम से मग को पकड़कर मन बहलाने हेतु लाने का निवेदन करती है वही मानस की सीता राम से उस मग को मानकर उसका चमड़ा मंगवाती हैं। वस्तुतः ज्यों–ज्यों समय व्यतीत होता गया कालचक्र के साथ बदलती परिस्थितियों व परिवेश के अनुसार हमने राम का चरित्र भी अपने तरीके से बदलना शुरू कर दिया। ऐसा ही श्री योगेश्वरकष्ण के चरित्र के साथ भी होता है। पुस्तक बाद रामायण कष्ण द्वैपायन (वेद व्यास) रचित महाभारत है। यद्यपि यह ग्रन्थ भी प्रक्षिप्त होने के कालक्रम में मिलावट के दोष से वंचित नहीं है

सरसंघ चालक राम के चित्र के स्थान पर राम के चरित्र का अनुकरण करने की प्रेरणा देते थे। एक बार महाराष्ट्र में औंध जागीर के जागीरदार के आमंत्रण पर वहां गये डॉ. केशव बलीराम हेड़गेवार को जब उन शासक महादेय ने एक मन्दिर पर चित्रित भित्ती चित्रों में छत्रपति शिवाजी महाराज को भगवान शंकर का अवतार बताया तो उन्होंने अवतार वाद को ही हिन्दू समाज के विरूद्ध बताया और कहा कि यह पतन का मार्ग हैं।

रामसेतु रक्षा समिति का आगामी घोषित कार्यक्रम, घर–घर, गांव–गांव, गली–गली में सेतु बन्धु रामेश्वर की मूर्ति या लिंग पूजन का है । वैसे वाल्मिकी रामायण में यह प्रसंग है ही नहीं, इसकी कल्पना भी तुलसीदास

इतिहास के उजले पक्ष को विकत दर्शाया गया है। साथ ही किंवदंतियों व किस्से, कहानियों ने भी किया है, उदाहरण के तौर पर ''रामसेतु'' प्रकरण ही लीजिए, इसमें वाल्मीकि कत रामायण के युद्धकाण्ड में ''हाथी जैसे भारी– भरकम पत्थरों, पर्वत–शिखरों को यन्त्रों द्वारा महाबली वानरों (विशेष नरों) द्वारा लाया जाना व नल नामक वानर के सहयोग से समुद्र पर सेतु निर्माण करना बताया गया है। इसी प्रकार तुलसीकत मानस में भी नल–नील द्वारा अच्छी तरह गढ़कर सुन्दर सेतु निर्माण करना बताया गया है किन्तु समूचे समाज को पत्थरों पर ''राम–राम'' लिखकर तैरना बताया जा रहा है जो दोनों में से एक भी पुस्तक में नहीं लिखा गया है।

रह रहे थे, अब तक सीता जी की खोज प्रारम्भ भी नहीं हुई थी। विजया दशमी व दीपावली पर्व रामायण काल के बहुत पूर्व से ही प्रचलित थे। वस्तुतः चैत्र मास में श्रीराम को वनवास मिला था और वैशाख शुक्ल चतुर्थी को पुष्पक विमान से अयोध्या हेतु लंका से रवाना होकर पंचमी को ऋषि भारद्वाज के आश्रम होते हुए षष्टी को नन्दीग्राम में भरत मिलाप हुआ व सप्तमी को १४ वर्ष पश्चात अयोध्या में राज्याभिषेक हुआ था। इस वर्ष इस लेख के लेखक का सप्रमाण साक्षात्कार दीपावली के ही दिन ई.टी.वी. राजस्थान ने प्रसारित किया था और अन्य धर्माचार्य मौन होकर समर्थन में तो आये किन्तु वह बात स्थिर है कि परनाला वही गिरेगा, ढाक के तीन पात।

तथापि इसकी विषय वस्तु को पांचवें वेद श्री से मान्यता प्राप्त है किन्तु हमारे समाज में व्याप्त भ्रम व अज्ञानता का पूरी तरह दोहन करने वाले कथा वाचक नामक उद्योगपतियों ने गीतगोविन्द पुस्तक के रचियता पं. जयदेव के भाई बोपदेव रचित ५०० वर्ष प्राचीन भागवत को वेद व्यास रचित बताकर ज्ञान यज्ञ के नाम पर अज्ञानता फैलाने का कुचक्र चला रखा है, जिसमें योगश्वर श्री कष्ण जैसे आप्त पुरूष को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी हैं। महर्षि दयानन्द तो श्री कष्ण के इतने जबरदस्त भक्त थे कि आक्रोश में यहां तक कहते थे कि ''भागवत लिखने वाला मां के गर्भ में ही मर गया होता तो ठीक होता''।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आद्य जी ने की है। कुल मिलाकर मोटे तौर पर अभिप्राय यह है कि जब तक हम अपने धार्मिक ग्रन्थों, शास्त्रों व ऐतिहासिक ग्रन्थों की शुद्धता को निर्धारित कसौटियों पर नहीं कसेंगे, इनकी प्रामाणिकता, ऐतिहासिकता को वेदादि सत्य शास्त्रों के सिद्धान्तों पर तथ्यात्मक ढंग से तर्क व विज्ञान के आधार पर शुद्ध नहीं करेंगे तब तक हम नित नये विवादों में फंसते रहेंगे। नित नये महापुरूष, ईश्वर, धर्म, सम्प्रदाय, तीर्थ आदि गढ़ते रहेंगे और स्वयं इनके चक्रव्यूह में गड़ते रहेंगे।

— ***गिरीश जोशी***
मंत्री आर्यसमाज, -३ग १५,
प्रभात नगर सेक्टर-५ उदयपुर
(राजस्थान)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

स्थान : कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार फेज-३, दिल्ली-११००५२

उद्‌घाटन समारोह
शनिवार २४ मई, २००७ सायं ५.३० से ६.०० बजे

समापन समारोह
रविवार १ जून, २००७ प्रातः १० से दोपहर १ बजे

विशेष प्रशिक्षण : योग, आसन, प्राणायाम, संध्या, हवन, धर्मशिक्षा, शिष्टाचार, सैनिक शिक्षा, दण्ड बैठक, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, कमाण्डो ट्रेनिंग, आत्मरक्षा, कराटे, लाठी, खेल। आर्यवीरों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर प्रशिक्षण प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए — **आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली-२, दूरभाष : २४५०४८६४, www.aryaveerdal.org** पर सम्पर्क करें।

❖ निवेदक❖ वीरेन्द्र आर्य *(संचालक)* अश्विनी आर्य *(महामन्त्री)* — ***आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश***
विनय आर्य *(महामन्त्री)* ब्र० राजसिंह आर्य *(प्रधान)* — ***दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा***

आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या

दूसरा नियम

।। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, ...।।

– प्रो० रत्नसिंह

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

संसार के सभी अवैदिक आस्तिक (ईश्वर–विश्वासी) सम्प्रदायों ने अपने–अपने तथाकथित धर्मग्रन्थों में ईश्वर के स्वरूप का वर्णण किया है, किन्तु उनमें एकरूपता का सर्वदा अभाव है। इसका कारण यह है कि साम्प्रदायिक लोगों ने ईश्वर का विवेचन तर्क के आधार पर न कर उसमें कल्पना का आश्रय लिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जब कोई श्रद्धालु जिज्ञासु इन मत-मतान्तरों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का अध्ययन करता है, तो वह यह निर्णय नहीं कर पाता कि किसका ईश्वर वास्तविक है और किसका अवास्तविक मानता है, तो कोई उसे देश विदेश में स्थित मानता है। किसी ने उसे निराकार माना है, तो दूसरे ने उसे साकाररूप में प्रस्तुत किया है। किसी का ईश्वर सगुण है, तो किसी का निर्गुण। एक साधारण बुद्धि का व्यक्ति निर्णय नहीं कर पाता कि किसका ईश्वर सच्चा है और किसका झूठा?

महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में वेद के आधार पर ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का वर्णन किया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यह प्रथम नियम में सिद्ध हो चुका है। ईश्वर पूर्ण है, अतः उसका ज्ञान भी पूर्ण है। उसका ज्ञान वेद पर आधारित ईश्वर का स्वरूप निश्चितरूपेण सत्य व वास्तविक होगा, इसमें सन्देह की गुंजाइश हो ही नहीं सकती। महर्षि ने ईश्वर का स्वरूप प्रस्तुत करने के लिए उसके जिन गुणों का वर्णन कर उन्हें जिस क्रम में प्रस्तुत किया है, वह बड़ा विलक्षण है। आगे चलकर इस पर प्रकाश डाला जाएगा। इस नियम से अद्वैतवाद, अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद, व मूर्तिपूजा आदि कई अवैदिक विचारधाराओं का स्वतः खण्डन हो जाता है। इन सब बातों का दिग्दर्शन आगे चलकर होगा। सर्वप्रथम हम इस नियम में रक्खे हुए शब्दों का क्रमशः विचार करते हैं –

सच्चिदानन्द - यह तीन शब्दों से मिलकर बना है। वे हैं सत्+चित्+ आनन्द। इन तीनों का अर्थ पथक–पथक् लिखते हैं–

सत् (अस भुवि) इस धातु से सत् शब्द सिद्ध होता है– "यदस्ति त्रिषु कालेषु न बाध्यते तत् सद्ब्रह्म" जो सदा वर्तमान, अर्थात् भूत, भविष्यत् वर्त्तमान कालों में जिसका बाध न हो, अर्थात् जो त्रिकालाबाध्य हो, उस परमेश्वर को सत् कहते हैं। परमेश्वर सदा विद्यमान रहता है, उसका नाश कभी नहीं होता, इसलिए उसे सत् कहते हैं। राम और कष्णादि महापुरूषों को ईश्वर नहीं कह सकते, क्योंकि वे तीनों काल में विद्यमान नहीं रह सकते थे।

चित् - जो चेतनस्वरूप सब जीवों को चिताने और सत्यासत्य का जनानेहारा है, इसलिए इस परमात्मा का नाम 'चित' है। ईश्वर जीवात्मा को सत्यासत्य का बोध किस प्रकार कराता है, इस सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश सप्तम व द्वादश समुल्लास में महर्षि ने लिखा है कि पापाचरणेच्छा समय में भय, शंका, लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्सव उत्पन्न करके ईश्वर जीवात्मा को सत्यासत्य का बोध कराता है।

आनन्द - जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते हैं और जो सब धर्मात्मा जीवों को आनन्द–मुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम आनन्द है।

इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को 'सच्चिदानन्दस्वरूप' कहते हैं, अर्थात् सत्स्वरूप होने से सत् और आनन्दस्वरूप होने से आनन्द और इन तीनों को मिलाकर सत्+चित् आनन्द = सच्चिदानन्दस्वरूप कहा गया है।

निराकार - जिसका कोई भी आकार नहीं और जो न कभी शरीर धारण करता है, इसलिए परमेश्वर का नाम निराकार" है।

क्रमशः
आर्यसमाज के नियम व्याख्या

देशहित से जुड़े कुछ सुझाव

देश को स्वतन्त्र हुए ६० वर्ष से ऊपर हो गए हैं; परन्तु स्वतन्त्र देश में जिस मात्रा में वेद प्रचार होना चाहिए था, उसका लेशमात्र भी नहीं हुआ। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है, जो धर्म के साथ राष्ट्रोत्थान की भी बात करता है। यही मार्ग स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने बताया था। आज हिन्दू जाति शक्तिशाली होने के बजाये पहले से कमजोर दिखती है, जिसके कई कारण हैं। इस बारे में कुछ सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं, जो आर्यसमाज की विचारधारा से जुड़े लोग अपनाएं, तो धर्म व देश की उन्नति हो सकती है।

१. इस समय देश के चार नाम हैं — भारत, हिन्दुस्तान, इण्डिया और आर्यावर्त। हमारे देश का केवल एक ही नाम होना चाहिए और वह है आर्यावर्त। इस समय विश्व में १६३ देश हैं और हमारे देश को छोड़कर बाकी सबका एक एक ही नाम है।

२. इसी प्रकार किसी अन्य देश के एक से अधिक राष्ट्रीय गान नही हैं, जबकि हमारे देश के दो राष्ट्रीय गान हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में राष्ट्रीय गान वन्देमातरम् के साथ लड़ा गया और १६४७ से पहले जन-गण-मन का कोई स्थान नहीं था। इस सन्दर्भ में केवल एक ही राष्ट्रीय गीत होना चाहिए।

३. केवल हिन्दू ही आर्यसमाज की विचारधारा को मानते हैं और यह विवाद समाप्त होना चाहिए कि कोई अपने को हिन्दू कहे या आर्य

४. अगले वर्ष देश में १६ नए केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं और आर्यसमाज का प्रयास होना चाहिए कि इनमें से एक विश्वविद्यालय, वेद विद्यालय के नाम से हो और उसमें केवल वेदमन्त्रों पर ही अध्ययन व अनुसंधान होना चाहिए। यह विश्व स्तर पर माना जा चुका है कि ऋग्वेद विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक है और इसमें चरित्र निर्माण के अतिरिक्त संगीत, औषधि, गणित आदि के विषय में भी पूर्ण जानकारी दी गई है।

५. विश्व के सभी देशों में एक ही राष्ट्रभाषा है, जबकि हमारे देश में अंग्रेजी, हिन्दी के ऊपर छा गई है। इस सन्दर्भ में कम से कम जिन प्रान्तो की भाषा हिन्दी है, उनके सरकारी कार्यालयों और अदालतों में केवल हिन्दी का ही प्रयोग हो।

६. कश्मीर की समस्या को उलझे हुए ६० वर्ष से ऊपर हो गए हैं और अब तक इसका कोई समाधान नहीं निकल सका है। इसका एक ही उपाय है कि जम्मू–कश्मीर को पंजाब के साथ जोड़ दिया जाए।

७. देश की जनता को सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चलाने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी बुद्धि शुद्ध हो, और इसलिए यह अच्छा होगा कि प्रातः दूरदर्शन गायत्री मन्त्र के साथ आरम्भ हों।

— हरबंसलाल कोहली
उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वर चाहिए

सुन्दर, गोरी, संस्कारशील, अमेरिका के अग्रणी बिजनस स्कूल से मैनेज़मैंट की डिग्री प्राप्त, आयु २५ वर्ष, कद ५ फुट ७ इंच की, नई देहली के समद्ध, प्रतिष्ठित आर्य, राजपूत परिवार की मेधावी, कार्यरत, शाकाहारी बेटी के लिए प्रतिष्ठित आर्यसमाजी विचारों वाले शाकाहारी परिवार का लम्बा, संस्कारवान इंजीनियरिंग तथा मैंनेजमैंट की भारत व / अथवा विश्व के अग्रणी विश्वविद्यालयों से डिग्री प्राप्त वर चाहिए। कपया सम्पर्क करें :-

श्री एस०पी० सिंह
सी-५२१, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-११००२४
ईमेल : sps_matri2007@yahoo.co.in
Mob : 9910278316

आर्यवीरांगना दल दिल्ली प्रदेश

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण शिविर

१८ मई से २५ मई, २००८

स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार दिल्ली-३२

उद्घाटन : १८ मई,०८ सायं ५ बजे **समापन** : २५ मई २००८

शिविर में जहां कन्याओं को बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, कराटे, शस्त्र संचालन, हस्तकला, संगीत, भाषण एवं विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास के सूत्र भी सिखाए जाते हैं।

शिविर शुल्क १५०/- रु० प्रति शिविरार्थी

अपने क्षेत्र की अधिक से अधिक कन्याओं को शिविर में अवश्य भेजकर नवयुवतियों को भारतवर्ष की श्रेष्ठ नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें।

-: निवेदक :-

ब्र. सुमेधा आर्या (संरक्षिका) वीणा आर्या (संचालिका) विभा आर्या (मन्त्री)
६८१८७०३२२५ ६८६१२८४२५६ ६८७३०५४३६८

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ब्रह्म से आच्छादित है

— प्रेमशील महेन्द्र

इस सष्टि में अनेकानेक विषयों को लेकर भिन्न—भिन्न समुदायों, वर्गों व व्यक्तियों की धारणाओं में विभिन्नता पाई जाती है। यदि परमात्मा के विषय को ही लें, तो हम देखते हैं कि कुछ लोग सष्टि क्रम को सुचारू रूप से चलाने में केवल परमात्मा ही की सत्ता को मानते हैं। उनका कथन है कि केवल एक ब्रह्म ही सत्य है, और जगत मिथ्या है। कुछ लोगों की मान्यता है कि ब्रह्म तो धर्मभीरू लोगों की स्वयं—रचित कल्पना मात्र है, वस्तुतः ब्रह्म नाम की कोई सत्ता है ही नहीं, न ही जगत को चलाने में उसकी कोई आवश्यकता है। केवल जीव व प्रकति ही से सब विस्तार है। यह जगत बिना किसी अन्य के चलाए स्वयं ही गतिशील होता है। दूसरी ओर, संसार के सबसे पुरातन व प्रमाणित ग्रन्थ वेद ने सारे ब्रह्माण्ड को गति देने व इसे नियमपूर्वक चलाने में तीन अनादि सत्ताओं को कारण माना है। वे तीन सत्ताएं ईश्वर, जीव व प्रकति नाम से जानी गई हैं। इसका प्रमाण वेद स्वयं देता है। वेद द्वारा प्रतिपादित एक कथानक के फलों से लदा पड़ा है, अकेला ही उसके फल खाने में व्यस्त है पर दूसरा मित्र मूक बैठा अपने मित्र को, जो अत्यन्त तन्मयता के साथ फलों का रसास्वादन कर रहा है दूर से उसे कवेल देख ही रहा है। वह यह भी देख रहा है कि फलों का उपभोग करते समय उसे अपने अभिन्न मित्र का तनिक भी ध्यान नहीं। मंत्र के अनुसार स्पष्ट है कि इन तीन सत्ताओं को मानना नितान्त अनिवार्य है, बिना इनके माने सष्टि का सन्तुलन बना रहना असम्भव है। इनमें से कोई एक भी सत्ता न हो हो तो पूरा विश्व गड़बड़ा उठे। तीनों का अपना—अपना स्थान व अपना—अपना महत्व है।

तथापि सष्टि की रचना में आदि मूल कारण परमात्मा ही है। वही सबका केन्द्र बिन्दु है। ब्रह्म सर्वाधिपति व सर्वोपरि होते हुए भी इतना विशाल हृदय है कि इसने जीवों को किसी कर्म बन्धन में नहीं बांधा हैं, अपितु कर्म करने में सबको पूर्ण स्वन्तंता प्रदान कर रखी है। निःसन्देह उसके कि परमात्मा सर्वत्र होने के नाते उसके किसी भी कर्म से अनभिज्ञ नहीं है। यहां तक कि वह उसकी आन्तरिक भावनाओं को भी जानता है। तभी तो व्यक्ति जब भीतर से अन्तर्यामी रूप से परमात्मा उसे सद्प्रेरणा देकर सावधान कर देता है। किन्तु मिथ्या अभिमानी जीव उसकी उपेक्षा करके अपनी मनमानी कर लेता है।

इन तीनों सत्ताओं के स्वरूप को जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय में जानकारी हो जाने के उपरान्त हमारी आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक समस्याओं का वास्तविक समाधान हो जायेगा। मोटे तौर पर इतना हम जान लें कि प्रकति केवल सत् है, जीवात्मा सत्चित् है, एवं परमात्मा सत्—चित् आनन्द है। उसे पाना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है। प्रकति सत् होते हुए भी परिवर्तनशील है। जीवात्मा अजर—अमर होते हुए भी निजकर्मानुसार विविध शरीरों को धारण करता और उन्हीं के आश्रय से क्रियाकलापों में सक्षम होता है। किन्तु परमात्मा सदा एकरस है। वह अजर अमर सर्वशक्तिमान, निराकार है। वह सभी कालों व स्थानों पर सर्वदा विद्यमान है। यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के एक मंत्र के अनुसार वह सभी जगह व्याप्त है, शरीर व नस—नाड़ी के बन्धन से रहित है, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, सभी पापों से मुक्त, सभी कालों व स्थानों को जानने वाला व मननशील है और शाश्वत काल ही से वह सर्वदा इन गुणों से भरपूर है। आर्यसमाज के द्वितीय नियम में महर्षि दयानन्द ने उसके कुछ प्रमुख नामों की सूची दे रखी है, साथ ही यह भी आदेश दिया है कि केवल उसी परमात्मा की उपासना करो। उसके स्थान पर किसी अन्य की उपासना न करो।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के प्रथम मंत्र — *''ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गधः कस्यस्विद्धनम्।''* में मुख्य रूप में तीन महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

— शेष पष्ठ ६ पर

अनुसार ईश्वर व कवि दोनों ही परम मित्र है। दोनों ही प्रकति रूपी वक्ष पर एक साथ बैठे हैं। इनमें से एक मित्र, ...जीवात्मा, प्रकति रूपी वक्ष के, जो

नियम–विधानानुसार जीव को प्रत्येक अच्छे व बुरे कर्म का फल सुख व दुःख के रूप में स्वाभाविक भोगना ही पड़ता है। जीव जो अल्पज्ञ है, वह नहीं जानता

बोध कथा

संन्यास का अर्थ – सर्वत्याग

– महात्मा आनन्द स्वामी

अजमेर नगरी से बाहर एक विशाल मैदान में ऋषि निर्वाण वाटिका के निकट ही महर्षि स्वामी दयानन्द की निर्वाण की अर्धशताब्दी मनाई जा रही थी। त्याग और तप की मूर्ति महाराज हंसराज भी एक कैम्प में विराजमान थे। वीतराग सच्चे संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज साधु-सन्तों के लिए पथक् लंगर जारी किया हुआ था।

एक दिन उसी लंगर में श्री स्वामी सर्वदानन्द जी की सेवा में बैठा था कि इतने में तीन–चार आर्य संन्यासी श्री स्वामी जी के पास पहुंचे और कहने लगे – "हम आपकी सेवा में निवेदन लेकर आए हैं।" श्री स्वामी जी ने पूछा – क्या बात है? संन्यासी कहने लगे – "हमारी इच्छा है कि महात्मा हंसराज जी के पास जाकर साधुमंडली की ओर से यह प्रार्थना की जाए कि वे संन्यास धारण कर लें और इस कार्य के लिए आप भी हमारे साथ चलें।"

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी मुस्कराए और कहने लगे "क्या महात्मा हंसराज जी ने संन्यास नहीं लिया हुआ है? सुनो ! इनमें से कितने संन्यासियों से महाराज जी बहुत अधिक संन्यासी हैं। उन्होंने केवल वस्त्र नहीं रंगे, अन्यथा उनका सारा जीवन ही संन्यास, त्याग और तप का जीवन रहा है। बाहर का चिह्न न हुआ तो क्या? उनके पास इस बात के लिए जाने का विचार छोड़ दो। मैं तो उनको अपने से अधिक संन्यासी समझता हूं। मैं किस मुंह से उनके सामने संन्यास का प्रस्ताव रखूं?" यह सुनकर वे महानुभाव चले गए। आज जो सच्चे संन्यासियों की ओर से भी जनता उपराम होती चली जा रही है, इसका बड़ा कारण यही है कि गेरुवे वस्त्रों मे बहुधा अब वैराग्य और तप दिखाई नहीं देता, जो पूर्व काल में था। संन्यास का अर्थ है – सर्व त्याग, और सर्व त्याग या पूर्ण वैराग्य के बिना मुक्ति का अधिकारी कोई नहीं बन सकता। ❑

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (32)

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

न प्रयोजनवत्वात् ।३२।।

अर्थ :- (न) (ब्रह्म जगत का कारण) नहीं है (प्रयोजनवत्वात्) (कर्ता के प्रयोजन वाला होने से।

भावार्थ :- चेतन कर्ता हमेशा किसी प्रयोजन से ही कार्य में प्रवत्त होता है। ब्रह्म पूर्णकाम है अर्थात् उसकी कोई इच्छा अपूर्ण नहीं है, इसलिए उसका कोई प्रयोजन होना भी संभव नहीं है। अतः ब्रह्म का संसार को बनाने में प्रवत्त होना नहीं बनता और इसलिए वह जगत् का कारण नहीं हो सकता। ऐसी शिष्य की आशंका है।

शिष्य प्रश्न करता है कि बिना किसी प्रयोजन के कोई चेतन किसी कार्य में प्रवत्त हो ऐसा दिखाई नहीं देता। यह बात अनुभव सिद्ध है। परन्तु सांसारिक व्यक्तियों के समान ब्रह्म की कोई कामना भी नहीं है और नहीं उसका कोई प्रयोजन किसी कार्य के लिए संभव है। तो फिर वह प्रयोजन के बिना ही जगत् की रचना में क्यों प्रवत्त होगा। इसलिए ब्रह्म को जगत् का कर्ता मानना युक्तिसंगत नहीं है। इसके अतिरिक्त शास्त्रों ने उसे आनन्द स्वरूप बताया है इसलिए न तो उसकी कोई कामना थी, इच्छा है और यही उसे कुछ प्राप्त करना है। अथर्व वेद (१०.८.४४) में उसे अकाम् अमत और इससे तप्त कहा है–

अकाव्यो धीरो अमतः स्वयम्भू रसेनतप्तो न कुतश्चनोनः।।

अर्थात् उसे ब्रह्म के मन में किसी प्रकार की कामनाएँ नहीं है, वह धीर है। वह अमत है, वह कभी मरता नहीं है। वह स्वयंभू है, उसे कोई पैदा करने वाला नहीं है। वह इससे, आनन्द से पूर्ण है, वह आनन्दमय है। वह सर्वविध्न पूर्ण है, उसमें कहीं भी कोई कभी न्यूनता नहीं है।

इसी को बहदारण्यक उपनिषद् (३.६.२८) में "विज्ञानमानन्दं ब्रह्म" अर्थात् ब्रह्म को ज्ञान से परिपूर्ण और आनन्दस्वरूप कहा है। ऐसे ब्रह्म का संसार की रचना में कोई प्रयोजन होना संभव नहीं है।

सूत्रकार अगले सूत्र में शिष्य की आशंका का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

– सी-२ए/६० जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

❑

Question & Answer

Detatchment from 'Moh'

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : In Life, we Jeev-atmas come closer to each other as husband-wife, as parents, as children, as friends and as other relations as well as social contacts. These can't be taken as random relationships. His Nayae is perfect. If these contacts are only to settle scores from our past lives, there is no other bond between us except to settle the scores for the ills/good done to each other in our past encounters. In that case why do we feel so emotionally attached to such relationships? Due to "MOH" ?When 'MOH' causes "DUKH', why not detach ourselves from this 'MOH' in this life itself and simply do our duty in a manner befitting each of these relationships? Then, again, if any of our near and dear ones suffer in this life, in front of our eyes, should it be taken as the outcome of his/her own actions and nothing beyond it. There is no need and scope for any undue 'DUKH'/'SHOK' about it. And, if on the other hand, we get a raw deal from any of our own, it should rightly be considered as the consequence of our own past deeds and not blame any of them. As rightly said, 'KARMAN KI GATI NAYARI, TARE NAHIN TARE'. So why blame any body for this. Swamiji, I am torn between these thoughts. At 81, my mind is in a state of flux. Apparently, there is no cause for this turmoil but still it haunts me. Please advise me. 'TAMSO MA JYOTIR GAMAYA' **C. K. Vatsa**

Ans.: Namaste, please. Mostly the relationships between each other are based on selfishness until a person/lady has deeply got Vedas knowledge, has meditated and with the result has controlled five senses, perceptions and mind. Yes, justice and fundamental law of God are unchangeable and complete in all respects i.e., Why in Rigveda Mantra 1/90/9 God is called "Aryama" i.e., "Supreme Judge". As far as Karmas are concerned, Vedas state that while discharging moral duties, everybody must continue listening Vedas, performing Yajyen, name jaap, practice of Asan, pranayaam, meditation etc., to achieve the main target to be ascetic. Ascetic not only leaves the whole world according to Yog

योगः कर्मसु कौशलम्

- डॉ० अजय कुमार पाठकः

गतांक से आगे :-

लघुत्वामारोग्यमलोलुपत्वं वर्ण प्रसादं स्वरसौष्ठवं च।
गन्धः शुभोमूत्रपुरीषमल्पं योगप्रवत्तिं प्रथमां वदन्ति।।१३।।

यथैवं बिम्बं मदयोपलिप्तं तेजोमयं भ्राजते तत् सुधान्तम्।
तद्वात्वमतत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः कतार्थो भवते वीतशोक।।१४।।

यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत्।
अजं ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।।१५।।

योगभ्यासी मनुष्यः प्रयाणकाले दिव्यस्वरूपं परमात्मनः प्राप्नोति। श्रीमद्भगवद्गीतायाः द्रष्टव्योयं श्लोक :–

प्रयाणकाले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।१०/४

युज्यते अनेन इति योगः। योगारूढ़ मनुष्य जितेन्द्रियः, कर्मपिष्ठः सत्यनिष्ट, क्षमाशीलश्च भवति। श्रीमद्भगवद्गीतायाम् उक्तच –

–ः क्रमशः ः–

साभार : संस्कत मंजरी, जुलाई-सितम्बर, २००७

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

shastra sutra 1/15, 16 but also leaves all articles of the universe made by God. So it is not fair to state that we have to cope up with relationships etc. But this daring step is only taken by a real aspirant. And the description of the aspirant is also mentioned in Bhagwad Geeta shloka 6/44 JIGYASURAPI YOGESYA HABDABRAHA MAATIVARTTE. Jigyasu means the aspirant.

Attachment is due to the three gunnas of prakriti by which our minds, bodies are made.Three gunnas contain attachment (kaam, krodh, madh, lobh, ahankaar etc.). So one has to exercise control on three gunnas which are mentioned clearly in four paad of Yog shastra by Patanjali Rishi. But it is bad luck that due to lack of preachings of learned Acharya of Vedas and Yoga, mostly the people are unknown about the bad effect of the said three gunnas (three qualities of prakriti-Raj, Tam, Satva) then how people can overcome the gunnas. Naturally, they will cooperate with illusion, in the shape of family, friends and society etc.

To be detached from Moh is not an easy task. It is related with Raag and Dwesh. These are illusion and whole illusion in Yog Shastra sutra 2/5 is called Avidya. The quality of Avidya is "to accept untrue as true etc." So until and unless we are able to know illusion, untruth, truth, live-non-alive matters etc., how can we be away from Moh? And to know all about vidya etc., there is compulsion to make contact with learned Acharya of Vedas and Yoga Philosophy but unluckily, as you have told people attached with illusion/Moh and they have considered illusion/Moh, a source of merriment which is false. People are enjoying like any thing, the materialistic article of the world. How the people, who are completely plunged in illusion, can think that they are on wrong path until a learned Acharya preaches? Thus name has time to go and listen to the Vedas from a learned Acharya of Vedas? So people will remain duly attached with illusion. It is very astonishing, that how a day word and dud Vedas are not being listened, Shri Krishna states in Geeta Shloka 2/29 that mere listening of Vedas will not serve the purpose until the preachings of Vedas are adopted, in action, in life. The sorrows are the result of our previous lives' deeds. We must face the sorrows happily being our own creation but Vedas too state that sorrows can be burnt in this human life by real worship of God. So luck is in our own hands.

To be continued...

एकादश समुल्लास : विविध भारतीय मतमतान्तर

गतांक से आगे :-

तीर्थों की परम्परा एवं उनकी महिमा तथा देवी–देवताओं की मान्यता चलाने में भी अज्ञानी ब्राह्मणों का ही प्रमुख स्वार्थ था। इन तीर्थों मे ंजितने भी चमत्कारों की बात की जाती है, उन सबके पीछे ही या तो मनुष्यकत छल कारण है, या फिर प्रकति का कोई नियम–जिन्हें न जान पाने के कारण सामान्य मनुष्य उनके भुलावे में आ जाता है। ऐसा ही सोमनाथ मन्दिर का रहस्य था, जिसे वहीं के एक भेदी ने महमूद गजनी को बताकर उस मूर्ति को तुड़वा डाला।

वास्तव में प्रत्येक पुराण में वेद में कहे सत्यों को ही तोड़–मरोड़ कर भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं के साथ जोड़ दिया गया। अवतारों के मानने में भी यही रहस्य है। अन्यथा जो अजन्मा, अनादि एवं अनन्त परब्रह्म है, वह जन्म लेकर इस सान्त काया में क्यों कर आयेगा?

गोदान–पिण्डदानादि की जितनी बातें चलाई गई, सब इन अज्ञानी ब्राह्मणों द्वारा भोले–भाले अज्ञानी लोगों को ठगने के लिए ही चलाई गई। ग्रहों का चक्कर भी इन्हीं लोगों ने 'फलित ज्यातिष' के नाम से चलाया है। सष्टि के क्रम में गणित ज्योतिश के आधार पर इन ग्रहों की गति आदि नापना तो उचित ठहराता है, परन्तु जो लोक–लोकान्तर के रूप में विविध ग्रह स्थित हैं, वे भौतिक पिण्डमात्र होने से मनुष्यों के भाग्यादि को कैसे नियंत्रित कर सकते हैं?

जातिभेद के सम्बन्ध में पूर्व भी कह आए हैं कि स्वयं अज्ञान में पड़े होने के कारण तथा पढ़ने में आलस्य के कारण ब्राह्मणादि ने ही अपने स्वार्थ की दष्टि से अपनी जजमानी या आयस्रोत बनाये रखने के लिए वर्णव्यवस्था को जन्मना घोषित कर दिया था, ताकि उन्हें कभी भी कोई ऊँचता के अधिकार से वंचित न कर सके। पर सच्ची वर्णव्यवस्था या जाति–निर्णय तपो गुणकर्म स्वभाव से ही होती है।

इसलिए जब तक इन अज्ञान की बातों को छोड़कर फिर से वेदोक्त धर्म का पालन करना नहीं आरम्भ करेंगे, तब तक भारत का और सारी मनुष्य जाति का, कल्याण संभव नहीं होगा। यदि हम आर्यावर्त को फिर से जगत् का सिरमौर और चक्रवर्ती सार्वभौम आर्य राज्य बनाना चाहते हैं, तब हमें सब मतमतान्तरों को त्याग कर सच्चे वेद मार्ग को फिर से अपनाना होगा। हमारे उद्धार का अन्य कोई मार्ग नहीं हैं।

–: क्रमशः :–

साभार : सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

क्या मैं आर्यसमाजी हूँ?

– अभिमन्यु कुमार खुल्लर

अपने आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर एक प्रख्यात विद्वान को आमंत्रित किया था। दैनिक यज्ञ एवं संध्या करना आवश्यक निरूपित करते हुए उन्होंने यहां तक कह दिया कि जो आर्यसमाजी दोनों काल की संध्या के लिए आधा घंटा भी नहीं देता, वह निकष्ट आर्यसमाजी है। बात सत्य थी, पर चुभने वाली थी। मैंने तत्काल और उसके बाद काफी समय तक आत्ममंथन और आत्मचिंतन किया और पाया कि मैं सामान्य और निकष्ट आर्यसमाजी के बीच की स्थिति में हूँ। जन्मना आर्यसमाजी हूँ। परिवार में पिछले ८०–६० वर्ष से दैनिक यज्ञ होता है और सायंकाल संध्या भी करते हैं। लगभग १५ वर्ष मंत्री और कोषाध्यक्ष पद पर आर्यसमाज की सेवा भी की है। डी.ए.वी.उ.मा. विद्यालय का लगभग इतनी अवधि तक मंत्री भी रहा हूँ और वर्तमान में आर्यसमाज व डी.ए.वी.उ.मा. विद्यालय का मंत्री हूँ।

हमारा आर्य समाज प्रदेश का अत्यन्त गौरवपूर्ण माना जाता था लगभग ७०–८० वर्षों तक यही इतिहास रहा। लगभग ८ वर्ष का ऐसा समय आया जब विघटनकारी शक्तियां हावी हो गयी और हमारा आर्य समाज कल्पनातीत दुराचार का अड्डा बन गया। तब ही तथाकथित आर्यसमाजी चरित्र को देखने, समझने और भुगतने का अवसर मिला। केवल स्थानीय नहीं, बल्कि प्रान्तीय स्तर पर भी ऋषि का कथन कि अन्यायी कितना शक्तिशाली क्यों न हो उसके आगे सिर न झुकाओ और सदाचारी निर्बल, निर्धन क्यों न हो उसका सम्मान करें, इस मापदण्ड पर खरे उतरने वाले बड़ी मुश्किल से एक दो ही मिले। समझदार लोग अपने काम धन्धे को छोड़कर "व्यर्थ के पचड़े में क्यों पड़े" वाले सीधे मार्ग को अपनाने में ही अपनी कुशल समझ कर शांत हो कर बैठ गए।

इस संघर्ष ने यह जानकारी और बढ़ाई कि केवल यही आर्य समाज नहीं बल्कि अधिकांश आर्यसमाजों में, प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभा में भी गुटबाजी सत्ता पर एकाधिकार का नंगा नाच चल रहा है?

इस सबसे परे मैं दयानन्द को दूर खड़े देखता हूँ। महर्षि अत्यन्त दुखी दिखायी दिए। कह रहे थे, मैंने वे संस्कत पाठशालाएं स्वयं तोड़ दी थी जो मेरा मन्तव्य कभी नहीं था"–यदि उसके सुधार का रास्ता नहीं सूझ पा रहा है तो क्यों न संगठन को भंग कर दिया जावे? संभवतया तब कोई महामानव उत्पन्न होगा ओर मेरे मन्तव्यों के अनुसार कार्य करने का बीड़ा उठाएगा?

सार्वभौमिक वैदिक धर्म का जयघोष करने वाला आर्य समाज आज एक पंथ के रूप में सिकुड़ा–सिमटा दिखाई पड़ता है। ज्यादा से ज्यादा उसे "विवाह कराने वाली संस्था" के रूप में बहत्तर हिन्दू समाज में स्वीकति मिली हुई है। इस सबका मूल कारण आर्य समाज में अधिकांश ऐसे व्यक्तियों का प्रवेश है जिन्हें आर्य समाज के उद्देश्य या मंतव्यों एवं महर्षि दयानन्द से कुछ लेना–देना नही है।

यदि इस कथन पर आपको कुछ संदेह हो तो अपने आर्य समाजी मित्रों से पूछिए कि–

१. क्या आप दोनों समय, छोडिए, एक समय भी संध्या करते है?

२. क्या आपके परिवार में सप्ताह, पक्ष अथवा एक मास में एक बार भी यज्ञ होता है, जिसमें सब परिवार अनुपस्थित नहीं रहते?

४. क्या आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ से लेकर पूरे कार्यक्रम तक उपस्थित रहते है?

५. क्या आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त ग्रन्थ छोडिए– केवल बहुचर्चित, सुविख्यात, कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश" का अध्ययन किया है?

६. क्या आपने महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को श्रद्धा एवं प्रेम से पढ़ा है जिससे उनके जीवन के विकट संघर्ष, मनुष्यमात्र के लिए प्रेमभावना, वैदिक विचारधारा को स्थापित करने की अदम्य आकांक्षा और विकट प्रयत्न का पता चल सके।

७. क्या आप अपने बच्चों को साप्ताहिक सत्संग, पर्वों वार्षिकउत्सव आदि पर अनिवार्यतः ले जाने के लिए कतसंकल्प हैं?

८. क्या आर्य समाज के कार्य में यथाशक्ति समय और धन देते हैं।

इन कतिपय प्रश्नों के उत्तर में आर्य समाज के संगठन की शक्ति छिपी हुई है। इस जाग्रत सक्रिय हुए बिना आर्य समाज वद्धों की संस्था बनी रहेगी। जो समय व्यतीत करने के उद्देश्य से सप्ताह में मिलते–जुलते

आओ ! हम चलें फिर उन कदमों पर

काँटों में रहकर जिसने फैलाई जग में सुगन्ध
सच्चे ईश्वर को बतलाकर खोल दिये सब द्वार बन्द

पूज रहे थे बना मूर्ति, अमूर्त बने शिवशम्भु की
परिभू विभु जगत् का कारण, अजर–अमर स्वयंभू की
नहीं व्यक्त, वह है अव्यक्त, बतला दिये दिखला वेद छंद।
सच्चे ईश्वर ....

सब जग का आधार प्रभु, सर्वत्र सभी में विद्यमान
फिर क्यूँ ताले में बन्द कर, रखा बनाकर मूर्तमान
दिखा गये पथ, बना गये सत् मिता गये जीवन के द्वन्द्व।
सच्चे ईश्वर ....

सच्चे शिव का पकड़ सहारा, तन-मन-धन जीवन सब वारा
वेदों से करके उजियारा, दूर किया अँधियारा सारा
मत्यु से अमत होकर के, काट गए जीवन के फंद
सच्चे ईश्वर ....

पोप-पुजारी भगवाधारी, ईश्वर के बनकर अधिकारी
मचा रहे थे आतंक भारी, तब ऋषिवर की चली सवारी
ईंटे और पत्थर खा–खाकर मिटा गये सारे पाखण्ड।
सच्चे ईश्वर ....

आओ जय–जयकार करें हम देवदयानन्द ऋषिवर की
जिसने जय–जयकार कराई विमलदेव परमेश्वर की
बोध पर्व यह ज्योति पर्व है, न होने दें ज्योति मंद।
सच्चे ईश्वर ....

ऋषि शोध से मिला बोध, हम मोद मनाएं मिल–जुलकर
नहीं क्रोघ प्रतिशोध, क्षोभ से, जीवन जिएं घुट–घुटकर
चले आज हम उन चिन्हों पर, जिन पर चले थे दयानन्द।
सच्चे ईश्वर ....

– विमलेश बंसल "आर्या "
मंत्रिणी आर्य समाज संतनगर, ईस्ट ऑफ कैलाश
३२६ द्वितीय तल संतनगर, नई दिल्ली।

सम्मिलित होता हो?

३. क्या आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित होना ''परम कर्तव्य'' (उपनियम) मानते है और बिना अत्यावश्यक ओर अपरिहार्य कारण के हैं और पर्वों पर प्रवचन सुनकर जीवन धन्य करते हैं।

– सेवानिवत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी
मन्त्री, आर्यसमाज नया बाजार,
लश्कर, ग्वालियर (म०प्र०)- ४७४००१

आर्यसन्देश - तृतीय अंक : स्वास्थ्य चर्चा

दर्द निवारक गोलियां (Pain Killers) दर्द मिटाएँ या रोग बढ़ाएँ?

आर्थराइटिस या गठिया (Arthrtis or Gout) में दर्द व सूजन को मिटाने तथा बुखार को नियंत्रित करने के लिए भी जाने वाली गोलियाँ (VNSAID-NON-Steroidal Anti- Inflamatory Drugs) जैसे–इबूप्रोफेन, डाईक्लोफेनेक, काक्स–२ तथा नेप्रोग्जेन, हदय के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अनुसन्धान दल का नेतत्व कर रहे कोलिन बाइजेंट के अनुसार–

काक्स २ के नियमित सेवन से हदयधात -(Heart Stroke) तथा दूसरी हदय सम्बन्धी बीमारियाँ पनपने का खतरा ४२ प्रतिशत बढ़ जाता है। इबूप्रोफेन के लम्बे समय तक लेने से यह खतरा ५१ प्रतिशत बढ़ जाता है।

डाईक्कलोफेनेक (७५ एम.जी.मात्रा) एक दिन में दो बार लेने से भी यह खतरा ६३ प्रतिशत बढ़ जाता है। (दक्षिण समाचार तथा कुल भूमि-मई २००७) इन खतरों से बचने का विकल्प है– आप नित्य, नियमित और निर्धारित समय तक करें प्राणायाम और सूक्ष्म व्यायाम तथा अपनाएं आयुर्वेदिक उपचार (योगऋषि स्वामी रामदेवजी द्वारा प्रचारित- प्रसारित)। कौन सा विकल्प आपको पसन्द है?– फैसला आपको करना है।

मिठाईयों पर लगाये जाने वाले चांदी के वर्क यह वर्क ज्यादातर गाय, भैंस की ताजा आंत में रखकर कूटकर बनाये जाते हैं। हर वर्क के साथ आंत के सूक्ष्म अंश भी चिपक जाते हैं।

– सुभाष चन्द्र गुप्ता
१५६, ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव
दिल्ली-११००६२

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
– सम्पादक

कुष्ठ रोग के नाम पर घणा, अलगाव, भेदभाव तथा तलाक रोकने के लिए नया कानून बने

पटना में न्यू सम्राट इन्टरनेशनल में प्रेस वार्ता कार्यक्रम द लेप्रोसी मिशन ट्रस्ट, नई दिल्ली के मीडिया सैन्टर तथा वुमन एम्पारमेंट के द्वारा कार्यक्रम आयोजित हुआ। वार्ता में अपने विचार देते हुए आचार्य कमलेश दिव्यदर्शी ने कहा 'चूंकि कुष्ठ रोग आज एक सरलतम बीमारी सिद्ध हो चुका है इसलिए इस रोग के आधार पर तलाक तथा अलगाव का अधिकार कानून में नहीं होना चाहिए।

कानून का हस्तक्षेप निर्माण के लिए हो घणा, उपेक्षा, अलगाव तथा तलाक के लिए नहीं। विवाह एक अतिसंवेदनशील तथा मानवीय सन्दर्भ है, जिस पर कानून का हस्तक्षेप निर्माण तथा दो दिलों को जोड़ने के लिए होना चाहिए; परन्तु कुष्ठ रोग के मामले में वर्तमान कानून के आधार पर अलगाव तथा तलाक का आधार प्रशस्त होता है, जिसमें संशोधन जरुरी है।

कुष्ठ रोगियों के सम्मान की दष्टि से निम्न कानून अनावश्यक तथा अन्यायपूर्ण भेदभाव से भरे हैं। आज के परिपेक्ष्य में इसमें गम्भीर संशोधन की आवश्यकता दीखती है।

हिन्दू विवाह अधिनियम १६५५ की धारा १३ (२) ४ के तहत कोई पक्ष (पति व पत्नी) गलित और असाध्य कुष्ठ रोग से पीड़ित हो तो तलाक ले सकता है।

विशेष विवाह अधिनियम १६५४ की धारा २५ के उपखण्ड १ जी के तहत पति व पत्नी कुष्ठ रोग से पीड़ित हैं तो तलाक ले सकता है।

रेलवे अधिनियम १६३६ के अन्तर्गत धारा ५६ उपखण्ड १, वह व्यक्ति जो संक्रामक औरा छूत के रोग से पीड़ित हो बिना रेलवे प्रशासन की स्वीकति से रेल में यात्रा नहीं कर सकता। उपखण्ड २ में रेल कर्मचारी अगर उसे स्वीकति देता है, तो दूसरे लोगो से अलग उसकी यात्रा निर्धारित करेगा। उपखण्ड ३ बिना स्वीकति के अगर कोई यात्रा करता पाया जाता है तो उसका टिकट या पास जब्त कर लिया जाएगा और उसे यात्रा से रोक दिया जाएगा।

बाल न्याय अधिनियम की धारा ४८ के उपखण्ड २ के अनुसार अगर कोई बच्चा कुष्ठ रोग से पीड़ित हो उसे अलग करते हुए विशिष्ट सम्बन्ध सेवा में रखा जाएगा।

साथ ही औद्योगिक विवाद अधिनियम १६४७ जीवन बीमा अधिनियम १६५६, पी० डब्ल्यू०डी० अधिनियम १६५५, भारतीय क्रिश्चन विवाह अधिनियम आदि भेदभाव इंगित होता है।

आज विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्पष्ट कर दिया है कि एम०डी०टी० के पहली खुराक खाने के २४ घंटे के

पृष्ठ ३ का शेष

पहला यह कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, दश्य व अदश्य शक्ति उस परमात्मा से आच्छादित है, दूसरा उसके द्वारा प्रदत्त भोगों को भोगो अवश्य, किन्तु त्याग भाव से। तीसरा, लालच मत करो। और अन्त में उद्बोधन दिया है कि यह धन व भौतिक पदार्थ सदा के लिए नहीं होते। अतः इनमें अधिक लिप्त न होवो। न जाने यह कब तुमसे छिन जाएं

परमात्मा की अतीव कपा व हमारे श्रेष्ठ कर्मो के फलस्वरूप मानव का शरीर मिलता है। किन्तु वर्तमान जीवन में दूषित व मानवताहीन कर्मो के फलस्वरूप हम इस जन्म में तो दुःख के भागी होते ही हैं, साथ ही हमारे आगामी जन्म में हमें अपने वर्तमान को सार्थक करना होगा। हम वास्तविक रूप से आस्तिक बनें। केवल परमात्मा के नाम की रट लगाने मात्र से ही हम आस्तिक नहीं हो जाएंगे। हमें तो प्रतिक्षण, प्रत्येक स्थान व काल में, प्रभु की सर्वव्यापकता की अनुभूति होनी परम आवश्यक है। ऐसा कर पाना कठिन तो है पर असंभव नहीं। केवल अपने मन को मोड़ देने व इन्द्रियों पर नियंत्रण के अभ्यास की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति यश का इच्छुक होता है, पर उसकी प्राप्ति के लिए दुष्कर्मो व दुर्विचारों से दूर रहने के लिए प्रयत्नशील रहना होगा। यह तभी संभव होगा जबकि हम उक्त मंत्र के प्रथम उद्बोधन को ध्यान में रखते हुए समझ लें कि हमारा कोई भी किया हुआ कर्म परमात्मा से ओझल नहीं। क्योंकि जिस परमात्मा से यह समस्त जगत आच्छादित है वह सर्वान्तर्यामी व सर्वत्र विद्यमान प्रभु बिना भौतिक नेत्रों के भी हमारे प्रत्येक कर्म को देख रहा है। प्रभु प्रदत्त धन–सम्पत्ति आदि पदार्थों का सेवन गिद्धवत्ति व लोभ से दूर निर्लिप्त रहते हुए करें। अन्त में हमें यह ज्ञान रहना भी आवश्यक है कि हमारे शरीर सहित सभी भौतिक पदार्थ अस्थिर हैं। हम नहीं जानते कि यह कब हमारा साथ छोड़ दें। यदि हम इनमें अधिक लिप्त न होंगे, इनमें अधिक ममत्व न होगा, तो हमें इनके छूटने पर कोई दुःख नहीं होगा और हमें सच्चे आनन्द की प्राप्ति सहज ही हो जाएगी, जो कि इसी मानव जीवन में संभव है और यही हर व्यक्ति का अन्तिम ध्येय भी है।

– उपाध्यक्ष,
प्रान्तीय आर्य महिला सभा,
दिल्ली राज्य

सकता है।

तलाक अधिनियम १८६६ की धारा १० (१) ४ अगर कोई पक्ष गलित और असाध्य कुष्ठ रोग से आवेदन देने की तिथि से २ वर्ष पहले से पीड़ित हो तो तलाक ले सकता है।

मुस्लिम अधिनियम १९३९ की धारा २ (६) के अनुसार पति २ वर्षों से कुष्ठ रोग रे पीड़ित है तो पत्नी तलाक ले सकती है।

साथ ही कुष्ठ रोग के ९९.९ प्रतिशत कीटाणु मर जाते हैं तथा व्यक्ति रोगमुक्त दशा में होता है उससे किसी को रोग कदापि नहीं फैल सकता। ऐसे में नए कानून की परम अवश्यकता है।

प्रेस वार्ता को डॉ० डब्ल्यू करकेटा, मनोज वर्गिश, मोजेज (वुमन एम्पावरमैंट) आदि ने सम्बोधति किया।

— कमलेश दिव्यदशी, सहमन्त्री, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

रामगली आर्यसमाज हरिनगर घंटाघर नई दिल्ली का
३५वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हरि नगर नई दिल्ली का ३५वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ दिनांक ४ मई को सम्पन्न हुआ, जिसमें वयोवद्ध कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामकिशन आर्य को शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। श्री देवेन्द्र शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती करुणा शर्मा के भजन हुए तथा आचार्य शिवनारायण शास्त्री के उपदेश के बाद महात्मा रामकिशोर वैद्य जी ने आशीष वचनों के साथ प्रधाना डॉ० उषा अरोड़ा ने सबका धन्यवाद किया। श्री देवराज आर्य मित्र ने मंच का संचालन किया।

— राजेश्वरी, मन्त्री

आर्यसमाज नारायण विहार नई दिल्ली में
योग शिक्षा शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज नारायण विहार का योग शिक्षा शिविर दिनांक १ मई से ४ मई, २००८ तक संयोजिका प्रेमलता भटनागर द्वारा आयोजित किया गया। बाबा रामदेव के परम शिष्य स्वामी कौशल देव जी तथा श्री सुधीर जैन जी द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविरार्थियों से हाल खचाखच भर गया। सभी लाभान्वित हुए। समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रधान श्री भूपेन्द्रनाथ सेतिया ने की।

— प्रेमलता भटनागर, शिविर संयोजिका

गहस्थ जीवन को सुखमय बनाओ

विवाह संस्कार में वर व वधू कुछ प्रतिज्ञाएं करके गहस्थ आश्रम में प्रवेश करते हैं और पति—पत्नी बनकर रहते हैं। प्रश्न है कि गहस्थ को आनन्दमय बनाने के लिए पति—पत्नी को कैसे रहना चाहिए?

गहस्थ की गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए सन्मार्ग पर चलते हुए एक—दूसरे के प्रति व्यावहारिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। दोनों का परस्पर अटूट विश्वास बना रहे, यह गहस्थ की सफलता की निशानी है। प्रेम को चिरस्थाई बनाए रखने के लिए निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है —

प्रेम चाहे पति—पत्नी का हो या दो मित्रों का है, सोचो प्रेम में दरार कब पड़ती है? जब परस्पर विश्वास टूटने लगता है। विश्वास क्यों टूटता है? जब एक दूसरे से सच्चाई को छिपाकर कपट करना आरम्भ होता है। सत्य को छुपाने का मतलब है — एक दूसरे को अंधेरे में रखना। जैसे जाने—अनजाने में कोई बड़ी गलती हो गई, कोई नुकसान हो गया तो उसे अपनी गलती के कारण को छुपाने की चेष्टा करना मूर्खता है।

दूसरा कारण है एक—दूसरे की स्वीकति (मर्जी) के बिना कोई विशेष कार्य करना, जैसे लेन—देन करना भी प्रेम के विश्वास में खटास पैदा करता है। आज सबसे बड़ा कारण जो हम देख रहे हैं, वह है किसी अन्य पुरुष या स्त्री से एकान्त में बातें करना या उसके साथ भ्रमण करना। यह सन्देह उचित भी है यदि गहस्थ में पति—पत्नी सुखपूर्वक रहना चाहते हैं तो एक—दूसरे से ईमानदारी के साथ सत्य का व्यवहार होना चाहिउ। कभी क्रोध में आकर कड़वी बात वाणी से न बोलें। कहीं भ्रम उत्पन्न हो गया हो तो उसे प्रेम से दूर करने का यत्न करें। एक—दूसरे की आवश्यकता और इच्छा को समझते हुए पूर्ण करने में सहयोग करें। अपनी त्रुटि या गलती को मानते हुए दूर करने का प्रयास करें। उर्दू का कवि कहता है — ***जहां मिया बीबी की बनती है, वो घर जन्नत से कम नहीं। जहां दोनों की आपस में नहीं बनती, वो दोजख से कम नहीं।***

— देवराज आर्यमित्र, डब्ल्यू जेड-४२८, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

महान् देशभक्त, क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी की जन्मशताब्दी पर कार्यक्रम सम्पन्न

"जीओ और जीने दो" पुस्तक का विमोचन

वरिष्ठ पत्रकार और दैनिक वीर अर्जुन के प्रधान सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र ने कहा कि विचारों की दष्टि से आज सारी दुनिया खोखली होती जा रही है। इस क्रम में भारत ही सबको राह दिखा सकता है; क्योंकि विचारों की दष्टि से हम बहुत मजबूत हैं। श्री नरेन्द्र ने यह बात दिनांक २ मई, २००८ को प्रताप भवन में महान देशभक्त प्रफुल्ल चाकी बलिदान शताब्दी पर आयोजित गोष्ठी में श्री अनिल नरेन्द्र दैनिक वीर अर्जुन के प्रधान सम्पादक ने अपने वक्तव्य में कहा। उन्होंने आगे कहा कि विचारों की दष्टि से आज भी दुनिया हमें देखती है । हमारी परम्परा व खून में एकता है जिसके चलते दुनिया की ताकतें हमें आपस में लड़ाने की कोशिशें करके हार चुकी हैं लेकिन उसमें कामयाब नहीं हुई हैं।

उन्होंने महान क्रान्तिकारी प्रफुल्ल चाकी को नमन करते हुए कहा कि देश को उन पर गर्व है; लेकिन साथ ही कहा कि आज की गोष्ठी का विषय 'जियो और जीने दो' इससे तालमेल नहीं खाता क्योंकि यदि क्रान्तिकारी यही सोचते रहते तो देश आजाद नहीं होता।

श्री नरेन्द्र आर्य ने कहा कि हमारे परिवार का जुड़ाव आर्यसमाज से बहुत पुराना है मेरे दादाजी इससे गहरा जुड़ाव रखते थे और मेरे पिता ने उन सिद्धान्तों को आगे बढ़ाया है लेकिन आर्यसमाज की जो बुनियाद है, पहले खुद को शुद्ध करो फिर आगे बढ़ो आज के समय में व्यावहारिक नहीं है।

उन्होंने कहा कि इससे बड़ा दुर्भाग्य आज क्या हो सकता है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी महान पुस्तक पर रोक लगाने की मांग उठ रही है। यह अपने में शर्म की बात है। आप किसी बात से सहमति रखें न रखें, लेकिन उसका इस तरह से विरोध नहीं कर सकते। 'सत्यार्थ प्रकाश' अपने में एक महान ग्रंथ है। श्री नरेन्द्र ने कहा कि इसके लिए सबसे बड़ा जो कारण उत्तर उत्तरदायी है वह हमारे हिन्दू धर्म का आपस में बंटा होना है। इसलिए हमें सोच बढ़ाते हुए एकजुट होना पड़ेगा।

श्री नरेन्द्र ने लेखक चन्द्रमोहन की सराहना करते हुए कहा कि वह बहुत योग्य और जुझारू व्यक्तित्व के हैं। इससे पहले भी इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जो बेहद शिक्षाप्रद हैं। उन्होंने आर्यसमाज के प्रतिनिधियों से कहा कि प्रताप, वीर अर्जुन परिवार उनके साथ है।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहाकि महाशय कष्ण की तपोस्थली में इस कार्यक्रम का होना हमारे लिए गर्व की बात है क्योंकि उनके जैसे सिद्धान्तवादी व्यक्ति आज बहुत कम मिलते हैं।

इससे पूर्व जैन मुनि आचार्य अमरेन्द्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माहमन्त्री श्री विनय आर्य भी उपस्थित थे। गोष्ठी का शुभारम्भ प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक पं० राजवीर शास्त्री के देशभक्ति के गीतों से हुआ।

महानदेशभक्त श्री प्रफुल्ल चाकी की जन्मशताब्दी के अवसर पर दैनिक वीर अर्जुन के कार्यालय में पत्रकार श्री चन्द्रमोहन की पुस्तक 'जीओ और जीने दो' का विमोचन करते बाएं से दाएं सर्वश्री चौ० चन्द्रभान, अनिल आनन्द, जैन मुनि आचार्य अमरेन्द्र, लेखक चन्द्रमोहन आर्य, धर्मपाल आर्य, आनन्द कुमार आर्य एवं अन्य।

शोक समाचार

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में

२७वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

१८ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्यसमाज मैन बाजार, रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन : १८ मई, रात्रि ८ बजे

समापन : १ जून, प्रातः ८ बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या मेंपधारकर आशीर्वाद प्रदान करें।

— वेदव्रत मेहता, प्रधान
प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

आर्यसमाज शकरपुर, दिल्ली का

४१वें वार्षिकोत्सव

१६ से २५ मई, २००८

चतुर्वेद शतकयज्ञ : प्रातः ६.४५ बजे
ब्रह्मा : पं० विजय प्रकाश शास्त्री
भजनोपदेश : श्री दिनेश दत्त
वेद कथा : श्री ओमवीर शास्त्री
भजन—वेदकथा : रात्रि ८ से १० बजे

यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन
२५ मई, २००८

अध्यक्षता : डॉ० सुशीला लाल
मुख्य अतिथि : डॉ० अशोक वालिया
वक्तागण : श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र रैली, श्री दिनेश दत्त, एवं श्री ओमवीर शास्त्री।

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

— मिश्रीलाल गुप्ता, प्रधान
पतराम त्यागी, मन्त्री

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में

अभूतपूर्व जागति का शंखनाद

बालक-बालिका चरित्र निर्माण निःशुल्क स्थाई शिविर प्रारम्भ

उद्देश्य : छात्रों की श्रेष्ठता, सफलता व बुद्धि वैभव का विकास

अलग-अलग के० एल० महता स्कूलों में अलग-अलग शिविर

— डॉ० श्रीमती विमल महता, अध्यक्षा
बलबीर मलिक, महामन्त्री

नगरपालिका अजमेर द्वारा

पतजलि योग शिविर सम्पन्न

नगरपालिका अजमेर के तत्त्वावधान में दिनांक ५ से ११ मई, २००८ तक पातंजलि योग शिविर सुभाष उद्यान अजमेर में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ० वीर रत्न आर्य, जिनके प्रशिक्षण में यह सात दिवसीय योग शिविर सम्पन्न हुआ। निरन्तर सात दिन तक युवा संगीतकार एवं भजनोपदेशक पं० राजवीर शास्त्री के सुमधुर संगीत का उपस्थित जनसमूह ने आनन्द उठाया। इस कार्यक्रम में सैंकड़ो नर—नारियों ने भाग लेकर स्वास्थ्य लाभ लिया।

— सोमरत्न आर्य, उपाध्यक्ष,
नगर-निगम अजमेर

पूर्व सभाप्रधान श्री वेदव्रत शर्मा की भाभी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी के अग्रज स्व० श्री सत्यव्रत शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती तारा शर्मा का निधन दिनांक ६ मई, २००८ को उनके जनकपुरी निवास पर लगभग ७५ वर्ष की आयु में हो गया। उनके निधन पर शान्ति यज्ञ एवं रस्म पगड़ी रविवार ११ मई, ०८ को गीता मन्दिर सी—२ जनकपुरी में आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के पुरोहित डॉ० कर्णदेव शास्त्री ने सायं ४ से ५ बजे तक सम्पन्न कराई। इस दुःखद अवसर पर दिल्ली की आर्यसमाजों के काफी संख्या में गणमान्य महानुभाव दिवंगत आत्मा को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित थे, जिसमें श्री अजय भल्ला, श्री सोमदत्त महाजन, वरिष्ठ उप प्रधान दिल्ली सभा भी सम्मिलित थे। श्री वेदव्रत शर्मा ने उपस्थित जनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आचार्य यशपाल शास्त्री को पितशोक

आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली के धर्माचार्य आचार्य यशपाल शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री रणवीर वानप्रस्थी जी का दिनांक ८ मई, २००८ को रात्रि २.३० बजे आर्यसमाज प्रीत विहार में आकस्मिक निधन हो गया। वे ८० वर्ष के थे। श्री वानप्रस्थी जी को वैदिक संस्कार अपने पूज्य पिता श्री रोशनलाल जी वानप्रस्थी जी से विरासत में प्राप्त हुए थे। उन्होंने अपने पीछे दो पुत्र, आचार्य यशपाल शास्त्री एवं श्री शिशुपाल आर्य सहित भरा पूरा परिवार छोड़ा है। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैतक गांव आर्यनगर, भगवन्तपुर, जिला हाथरस(उ०प्र०) में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मति में शोक सभा उनके पैतक गावं में दिनांक १६ मई, २००८को प्रातः ६ बजे आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। — सम्पादक

साप्तहिक आर्य सन्देश
12 मई, 2008 से 18 मई, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १५/१६–०५–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

वार्षिक परीक्षाओं में सफल समस्त विद्यार्थियों एवं विद्यालयों को हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 1
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)

सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये

प्राप्त करें मात्र 1200/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

आर्यसमाज अशोक विहार-१ में
त्रिदिवसीय यजुर्वेदीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज अशोक विहार–१ का त्रिदिवसीय यजुर्वेदीय यज्ञ दिनांक ६ से ११ मई, ०८ तक श्रद्धापूर्वक मनाया गया। यज्ञ आचार्य योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हुआ। इस अवसर पर भजन आर्यसमाज की बहनों एवं समाज के पुरोहित पं० सतीश चन्द्र जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। प्रवचन आचार्य योगेन्द्र कुमार शास्त्री के हुए। यज्ञ पूर्णाहुति के दिन वेद सम्मेलन हुआ जिसका विषय था 'भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज का योगदान'। इस पर आचार्य योगेन्द्र शास्त्री के अतिरिक्त आर्यजगत के युवा विद्वान् डॉ० जयेन्द्र कुमार के प्रवचन एवं भजन हुए।

— *अविनाशचन्द्र कपूर, प्रधान*
राममेहर सिंह, मन्त्री

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा युवाओं को आर्यसमाज में आने के लिए प्रेरित करने के लिए विशेषरूप से तैयार की गई फिल्म

"सत्य की राह" वीसीडी

~~50~~/– 25/– रु.

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें।नोट : डाक द्वारा मंगाने पर डाक-व्यय पथक् से देय होगा। प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

निर्वाचन समचार

आर्यसमाज अशोक विहार-१, दिल्ली-११००५२

प्रधान : श्री अविनाश चन्द्र कपूर
मन्त्री : श्री राममेहर सिंह
कोषाध्यक्षः श्री ओम प्रकाश आर्य

सम्पूर्ण वेद-भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये

प्राप्त करें मात्र 1200/- में

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।

प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

2 जून से 15 जून, 2008 स्थान : गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

प्रवेश शुल्क : शाखानायक 200/— रुपये उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक : 250/— रुपये

व्यायामाचार्य, शास्त्राचार्य, नियुद्धाचार्य : 300/— रु0 बौद्धिक शिक्षक, प्राथमिक चिकित्सक : 300/— रु0

शिविर में पधारने वाले आर्यवीर अपने प्रान्तीय संचालक/आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुतिपत्र अवश्य साथ लाए।

—: निवेदक :—

आचार्य विजयपाल (शिविर संयोजक)	राजेन्द्र विद्यालंकार (महामन्त्री)	स्वामी देवव्रत (प्रधान संचालक)
9416055044	9416026571	9868620631

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

विशाल आर्यवीरांगना प्रशिक्षण शिविर

२५ मई से १ जून, २००८

स्थान : आर्ष गुरुकुल नोएडा, सैक्टर-३३, नोएडा (उ०प्र०)

प्रवेश शुल्क : 150/- रुपये प्रति वीरांगना

आर्यसमाजों में संचालित होने वाली प्रत्येक आर्य वीरांगना दल शाखा एवं आर्यसमाजो से निवेदन है कि अधिकाधिक आर्यवीरांगनाओं को इस शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु पंजीकरण कराएं।

-: निवेदक :-

स्वामी उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**अंजू बजाज**	**विमला मलिक**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
9891125554	9810702760	51550176	25597794

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित

गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्‌भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

"वैदिक प्रकाशन" की प्रस्तुति

आर्यजनता की भारी मांग पर पुनः निर्मित

ओ३म् स्टिकर

केवल मात्र 150/- सैंकड़ा

विक्रेताओं के लिए विशेष छूट

आज ही सभा कार्यालय को अपने आर्डर भेजें। डाक-व्यय अलग से देय होगा। सम्पर्क करें - २३३६०१५०, २३३६५६५६

Email : aryasabha@yahoo.com

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली— २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५—हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**